पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2023 का आपराधिक अपील (खं.पी.) No.396

पीएस/थाना मामला No.-18 वर्ष-2020 थाना - एकचारी जिला-भागलपुर, से उत्पन्न

==========

1. अमन यादव @अमन कुमार, पिता- स्वर्गीय इंद्रदेव यादव@स्वर्गीय इंद्रदेव यादव

2. रवि रोशन यादव @रवि रोशन कुमार यादव, पिता - रामखेलावन यादव दोनों निवासी गाँव बारी चटैया, पुलिस स्टेशन-एकचारी, जिला-भागलपुर।

....याचिकाकर्ता

बनाम

बिहार राज्य

....उत्तरदाता

==========

साथ में

2023 का आपराधिक अपील (खं.पी.) सं. 426

पीएस/थाना मामला No.-18 वर्ष-2020 थाना-एकचारी जिला-भागलपुर, से उत्पन्न

==========

कुंदन यादव @कुंदन कुमार पिता - मंटू यादव@सुरेंद्र यादव निवासी गाँव-बड़ी चटैया, पुलिस स्टेशन-एकचारी, जिला-भागलपुर ।

.... अपीलार्थी

बनाम

बिहार राज्य

.... उत्तरदाता

==========

दंड प्रक्रिया संहिता---धारा 374(2), 161, 164, 313---भारतीय दंड संहिता---धारा 376 डीए---लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम (पोक्सो एक्ट)---धारा 5(जी), 6, 29, 30, 42---भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872---धारा 32, 145, 157---सजा के विरुद्ध अपील---अपीलकर्ताओं के विरुद्ध आरोप है कि उन्होंने पीड़िता के साथ बलात्कार किया---निष्कर्ष: धारा 164

सीआरपीसी के तहत पीड़ित लड़की द्वारा दिए गए बयान को छोड़कर, अपीलकर्ताओं के अपराध को साबित करने के लिए कोई भी दोषपूर्ण सामग्री रिकॉर्ड पर उपलब्ध नहीं है---पीड़ित लड़की ने घटना की तारीख के लगभग 1 वर्ष बाद आत्महत्या कर ली थी, इसलिए उसे गवाह के रूप में परीक्षित नहीं किया जा सका---केवल इसलिए कि पीड़िता मर चुकी है और परिणामस्वरूप उसकी जांच नहीं की जा सकी, कभी भी आरोप का आधार नहीं हो सकता यदि संबंधित आरोपी के आपराधिक कृत्य को साबित करने के लिए अन्यथा साक्ष्य उपलब्ध हैं और केवल धारा 164 सीआरपीसी के तहत पीड़ित लड़की द्वारा दिए गए बयान पर भरोसा करके आरोपी को बलात्कार के अपराध के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता है, तो आरोपी को बरी कर दिया जाएगा--- वर्तमान मामले में चिकित्सकीय साक्ष्य स्पष्ट रूप से पीड़ित लड़की के साथ बलात्कार के दावे को खारिज करते हैं, अपीलकर्ताओं द्वारा उस पर हमला किए जाने के तथ्य की तो बात ही छोड़ दें --- पीड़ित लड़की द्वारा अपनी लिखित रिपोर्ट में दिए गए बयान और सीआरपीसी की धारा 164 के तहत दिए गए बयान विरोधाभासों से भरे हैं, अभियोजन पक्ष मूलभूत तथ्यों को स्थापित करने में विफल रहा है, चिकित्सकीय साक्ष्य पीड़ित लड़की के साथ बलात्कार का कोई संकेत नहीं दिखाते हैं और इसके विपरीत यह दर्शाते हैं कि पीड़ित लड़की के गर्भ में 6 सप्ताह 2 दिन का गर्भ था, जिसे अभियोजन पक्ष द्वारा अस्पष्ट बनाया गया है --- धारा 164 सीआरपीसी के तहत दर्ज किया गया बयान एक ठोस सबूत नहीं है, हालांकि यह एक तथ्य की जांच करने के लिए सक्षम प्राधिकारी के समक्ष दिया गया औपचारिक बयान है जिसका इस्तेमाल विरोधाभास के लिए या गवाह की पुष्टि के लिए किया जा सकता है --- विद्वान ट्रायल जज ने यह मान कर गलती की कि सीआरपीसी की धारा 164 के तहत दर्ज पीड़ित लड़की के बयान की अभियोजन पक्ष के गवाहों की गवाही से पुष्टि हो गई है---आलोचनापूर्ण निर्णय और आदेश को रद्द किया गया है---अपील स्वीकार की जाती है। ***(पैरा 36, 37, 40, 41)***

*1992 सप (3) एससीसी 179, 2023 एससीसी ऑनलाइन पैट 5103, (2013) 14 एससीसी 266, (1970) 2 एससीसी 61 ..... **संदर्भित।***

==========

पटना उच्च न्यायालय का निर्णय/आदेश

==========

उपस्थिति :

(2023 के आपराधिक अपील (खं. पी.) संख्या 396 में)

अपीलार्थियों के लिए : श्री प्रवीण कुमार, अधिवक्ता,

राज्य के अधिवक्ता : श्री बिनोद बिहारी सिंह, एपीपी

(2023 का आपराधिक अपील (खं. पी.) संख्या 426)

अपीलार्थी के लिए : श्री रंजीत कुमार, अधिवक्ता,

श्री दिलीप कुमार, अधिवक्ता,

राज्य के लिए : श्री दिलीप कुमार सिन्हा, एपीपी

==========

गणपूर्ति/समक्ष: माननीय न्यायमूर्ति श्री मोहित कुमार शाह

और

माननीय न्यायमूर्ति श्री नानी टैगिया

मौखिक निर्णय

(प्रतिः माननीय न्यायमूर्ति श्री मोहित कुमार शाह)

तारीखः 06-02-2025

उपरोक्त अपीलें, जो दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (इसके बाद "दं. प्र. सं. " के रूप में संदर्भित) की धारा 374 (2) के तहत दायर की गई है, एक ही दोषसिद्धि निर्णय और एवं सजा के आदेश क्रमशः दिनांकित 10.02.2023 और 04.03.2023 से उत्पन्न हुए है, जो विशेष न्यायालय (पॉक्सो अधिनियम)-सह-7 वें अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश, भागलपुर (जिसे इसके बाद "विद्वत विचारण न्यायाधीश" के रूप में संदर्भित किया गया है) द्वारा 2020 के पॉक्सो केस सं. 81 में (2020 के एकचारी पी. एस./थाना केस सं.18 से उत्पन्न) पारित किए गया, इसलिए, इन अपीलों पर एक साथ सुनवाई की गई है और वर्तमान उभयनिष्ठ निर्णय और आदेश द्वारा उनका निष्पादन किया जा रहा है। दिनांक 10.02.2023 के उक्त निर्णय द्वारा, विद्वत विचारण न्यायाधीश ने अपीलार्थियों को भारतीय दंड संहिता (इसके बाद "भा. द. सं. " के रूप में संदर्भित) की धारा 376 डी ए और यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण अधिनियम, 2012 (इसके बाद "पॉक्सो अधिनियम" के रूप में संदर्भित) की धारा 5 (जी)/6 के तहत अपराध करने के लिए दोषी ठहराया है और उन्हें पॉक्सो अधिनियम की धारा 5 (जी)/6 के तहत आजीवन कठोर कारावास

अर्थात अपने शेष प्राकृतिक जीवन के लिए सजा सुनाई गई है, साथ में प्रत्येक रु 50,000/- रु. अर्थदंड और इसकी चूक में, अपीलार्थियों को छह महीने की अवधि के लिए साधारण कारावास की सजा सुनाई गई है। पॉक्सो अधिनियम की धारा 42 के तहत निहित प्रावधानों पर विचार करते हुए भा. द. सं. की धारा 376 डी ए के तहत कोई अलग सजा नहीं दी गई है।

2. मामले के संक्षिप्त तथ्य यह हैं कि 04.08.2020 को, पीड़ित लड़की ने, एकचारी पुलिस स्टेशन के प्रभारी- अधिकारी के समक्ष अपनी लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। लिखित रिपोर्ट में, पीड़ित लड़की ने कहा था कि 29.07.2020 के शाम को लगभग 6 बजे, जब वह अपने घर से बासा जा रही थी, रास्ते में तीन व्यक्ति, अर्थात् अमन यादव (पहले मामले के अपीलकर्ता नंबर 1), रवि रोशन यादव (पहले मामले के अपीलकर्ता नंबर 2) और अंकुश कुमार यादव ने हथियार और चाकू दिखाकर उसे जबरन एक खेत में ले गए और उसके साथ गलत व्यवहार किया और शोर मचाने पर उस पर हमला भी किया और अंततः वह बेहोश हो गई। कहा जाता है कि पीड़ित लड़की को बड़ी चटैया में गंगा नदी के तट पर फेंक दिया गया था।सुबह लगभग 4 बजे, पीड़ित लड़की ने कहा था कि वह होश में आ गई थी, जिसके बाद उसके परिवार के सदस्य उसे वापस उसके घर ले गए थे।लिखित रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि वह अनुसूचित जाति की एक गरीब लड़की है।

3. पीड़ित लड़की की उक्त लिखित रिपोर्ट के आधार पर, 2020 का एकचारी थाना काण्ड सं. 18 का एक औपचारिक एफ. आई. आर. थाना प्रभारी, एकचारी थाना द्वारा 4.8.2020 को 15:30 बजे, भा. द. सं. की धाराओं 341, 323, 376, 506 और पॉक्सो अधिनियम की धारा 4 के तहत के तहत अमन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी नंबर 1), रवि रोशन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी नंबर 2) और एक अंकुश कुमार के खिलाफ दर्ज किया गया था। जाँच के बाद और अपीलार्थियों के मामले को सही पाए जाने के बाद, पुलिस ने 30.09.2020 को भा. द. सं. की धारा 376 डी ए, पॉक्सो अधिनियम की धारा 4 और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण अधिनियम, 1989 (इसके बाद "अधिनियम, 1989" के रूप में संदर्भित) की धारा 3 (1) (आर) (एस) (डब्ल्यू) (ii)/3 (2) (वी) के तहत आरोप पत्र

समर्पित किया । इसके बाद, विद्वत विचारण न्यायाधीश ने 25.01.2021 के आदेश के माध्यम से भा. द. सं. की धारा 376 डी ए, पॉक्सो अधिनियम की धारा 5 (जी)/6 और अधिनियम, 1989 की धारा 3 (1) (आर)/ 3 (1) (एस)/3 (1) (डब्ल्यू) (ii)/3 (2) (वी) के तहत अपराध का संज्ञान लिया था। दिनांक 03.12.2021 को, भा. द. सं. की धारा 376 डी ए, अधिनियम, 1989 की धारा 3 (1) (आर)/ 3 (1) (एस)/3 (1) (डब्ल्यू) (ii)/3 (2) (वी) और पॉक्सो अधिनियम की धारा 5 (जी)/6 के तहत याचिकाकर्ताओं के खिलाफ विद्वत परीक्षण न्यायाधीश द्वारा आरोप बनाए गए थे, जिसके लिए उन्होंने दोषी नहीं होने का अनुरोध किया और मुकदमा चलाने का दावा किया।

4. मुकदमे के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से 17 गवाहों से पूछताछ की गई है और बचाव पक्ष की ओर से तीन गवाहों से पूछताछ की गई है।जहां पी. डब्ल्यू. 1 सिकंदर रविदास, पी. डब्ल्यू. 2 बिंदेश्वरी पासवान, पी. डब्ल्यू. 3 पप्पू यादव और पी. डब्ल्यू. 4 मोती यादव सुनी-सुनाई और औपचारिक गवाह हैं, वहीं पी. डब्ल्यू. 5 मुनीलाल मंडल पीड़ित लड़की के दादा हैं , पी. डब्ल्यू. 6 सौहाद्री देवी पीड़ित लड़की की मां है, पी. डब्ल्यू. 7 रमाकांत मंडल पीड़ित लड़की का पिता है, पी. डब्ल्यू. 8 अमरजीत कुमार मंडल पीड़ित लड़की का भाई है, पी. डब्ल्यू. 12 लक्ष्मीकांत मंडल पीड़ित लड़की का चाचा है और पी. डब्ल्यू. 13 नितीश कुमार पीड़ित लड़की का चचेरा भाई है।जहां तक पी. डब्ल्यू. 9 मुकेश कुमार और पी. डब्ल्यू. 11 मणि भूषण कुमार का संबंध है, वे वर्तमान मामले के जांच अधिकारी बताए जाते हैं।पी.डब्लू.10 विकास यादव को एक स्वतंत्र गवाह बताया गया है। पी. डब्ल्यू. 14 डॉ. आनंद कुमार मुरारी, पी. डब्ल्यू. 15 डॉ. बीना पानी पोद्दार और पी. डब्ल्यू. 16 डॉ. पूनम मिश्रा डॉक्टर हैं, जिन्होंने पीड़ित लड़की की आयु सत्यापन रिपोर्ट/चिकित्सा रिपोर्ट तैयार की है। पी. डब्ल्यू. 17 चंदा लाल जो न्यायिक मजिस्ट्रेट, प्रथम श्रेणी हैं, जिनकी उपस्थिति में पीड़ित लड़की का बयान दं. प्र. सं. की धारा 164 के तहत दर्ज किया गया था।

5. पहले मामले के अपीलार्थियों की ओर से पेश विद्वान वकील श्री प्रवीण कुमार ने कहा है कि फर्दबयान के माध्यम से दर्ज पीड़ित लड़की का बयान भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 32 के आधार पर प्रासंगिक तथ्य

का बयान होने के योग्य नहीं है।उन्होंने कहा कि पी. डब्ल्यू. 7 रमाकांत मंडल ने लिखित रिपोर्ट पर केवल उनकी बेटी के हस्ताक्षर की पहचान की है, लेकिन लिखित रिपोर्ट को साबित नहीं किया है।वास्तव में न तो लिखित रिपोर्ट को उस व्यक्ति द्वारा साबित किया गया है जिसने इसे लिखा है और न ही इसे प्रदर्शित किया गया है।बेशक लिखित रिपोर्ट का लेखन पीड़ित लड़की द्वारा किए गए हस्ताक्षर से अलग है, जैसा कि जांच अधिकारी यानी पी. डब्ल्यू. 9 मुकेश कुमार द्वारा भी स्वीकार किया गया है।फर्दबयान में यह भी कहीं नहीं कहा गया है कि इसे पीड़ित लड़की को पढ़ा गया था जिसने इसे समझ लिया था और अपने हस्ताक्षर किए थे।इसके बाद यह प्रस्तुत किया जाता है कि पुलिस द्वारा दर्ज की गई धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत पीड़ित लड़की का बयान न तो प्रदर्शित किया गया है और न ही साबित किया गया है।पहले मामले के अपीलार्थियों के विद्वान वकील ने तर्क दिया है कि धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दर्ज पीड़ित लड़की का बयान अपीलार्थियों को दोषी ठहराने का आधार नहीं हो सकता है।इसके बाद यह तर्क दिया जाता है कि डॉ. पूनम मिश्रा (पी.डब्लू.16) द्वारा प्रस्तुत की गई 18.08.2020 (प्रदर्शनी-P5/PW16) की मेडिकल रिपोर्ट से भी पता चलता है कि बलात्कार का कोई सबूत नहीं है।यह प्रस्तुत किया जाता है कि चूंकि पीड़ित लड़की की जांच/प्रतिपरीक्षा नहीं की गई है, इसलिए अपीलार्थियों के अपराध को साबित करने के लिए रिकॉर्ड पर कोई अन्य सामग्री नहीं है, विशेष रूप से क्योंकि पीड़ित लड़की की लिखित रिपोर्ट और धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत उसके द्वारा दिया गया बयान एक दूसरे के विपरीत हैं।वास्तव में, डॉक्टर को किसी भी आंतरिक या बाहरी चोट से कम हिंसा का कोई निशान नहीं मिला है।

6. दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी की ओर से उपस्थित विद्वान वकील श्री रंजीत कुमार ने प्रस्तुत किया है कि दूसरे मामले के अपीलकर्ता, कुंदन यादव उर्फ कुंदन कुमार यादव का नाम न तो एफ. आई. आर. में था और न ही पीड़ित लड़की द्वारा धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत दिए गए बयान में था और उसका नाम केवल पीड़ित लड़की द्वारा 19.08.2020 को धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दिए गए बयान में सामने आया है।उन्होंने प्रस्तुत किया है कि मूलभूत तथ्य गलत हैं और पीड़ित ने धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत या धारा

164 दं. प्र. सं. के तहत विद्वत मजिस्ट्रेट के समक्ष अपना बयान देते हुए इस तथ्य को छुपाया है कि वह गर्भवती थी, इसलिए कोई भी अपराध जैसा कि आरोप लगाया गया है, दूसरे मामले का एकमात्र अपीलार्थी के खिलाफ नहीं बनाया गया है।दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी के विद्वान वकील ने धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत पीड़ित लड़की द्वारा दिए गए बयान का उल्लेख करते हुए आगे तर्क दिया है कि न्यायिक मजिस्ट्रेट, प्रथम श्रेणी ने यह सुनिश्चित करने के लिए पीड़ित लड़की से कोई व्याख्यात्मक प्रश्न नहीं किया था कि वह अपना बयान देने के लिए मानसिक स्थिति में थी।यह तर्क दिया जाता है कि धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दिया गया बयान सबूत का एक ठोस टुकड़ा/आधार नहीं है और इसका उपयोग केवल विरोधाभास और/या संपुष्टि के लिए किया जा सकता है, लेकिन अपीलार्थी को दोषी ठहराने का आधार नहीं बन सकता है।यह भी तर्क दिया जाता है कि पॉक्सो अधिनियम की धारा 29 के तहत अनुमान/उपधारणा भी नहीं बनाया गया है।द्वितीय मामले के अपीलार्थी के विद्वान वकील ने यह भी कहा है कि लिखित रिपोर्ट में, पीड़ित लड़की ने बलात्कार की एक घटना के बारे में बताया है, हालांकि, धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दिए गए अपने बयान में उसने बलात्कार की दो घटनाओं के साथ एक और घटना जोड़ी है।यह तर्क दिया जाता है कि पीडब्लू 8 अमरजीत कुमार मंडल (पीड़ित लड़की का भाई) और पीडब्लू 13 नितीश कुमार (पीड़ित लड़की का चचेरा भाई) ने विरोधाभासी बयान दिए हैं और यहां तक कि पीड़ित लड़की के पिता और चाचा यानी पीडब्लू 7 और आईडी 12 ने भी विरोधाभासी बयान दिए हैं।इस प्रकार, यह प्रस्तुत किया जाता है कि चूंकि गवाहों द्वारा दिए गए बयान विरोधाभासों और असत्य से भरे हुए हैं, इसलिए उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।इसके बाद यह प्रस्तुत किया जाता है कि अभिलेख पर चिकित्सा साक्ष्य पीड़ित लड़की के साथ बलात्कार किए जाने के तथ्य को खारिज करता है, क्योंकि यह हिंसा या पीड़ित लड़की के शरीर पर बाहरी/आंतरिक चोटों की उपस्थिति का कोई संकेत नहीं दिखाता है और इसके विपरीत छह सप्ताह और दो दिन की गर्भावस्था पाई गई थी, जो पूरी घटना को संदिग्ध बनाता है।

7. इस मोड़ पर, दूसरे मामले के अपीलार्थी के विद्वान वकील ने ***पवन कुमार बनाम बिहार राज्य और अन्य. (आपराधिक अपील (डी. बी.) 2023*** का ***सं. 724),*** जो **26.02.2024** को दिया गया, के मामले में इस अदालत की विद्वान खंड पीठ द्वारा दिए गए फैसले पर भरोसा किया है, यह प्रस्तुत करना के लिए कि मौखिक और चिकित्सा साक्ष्य के बीच टकराव के मामले में, पहले वाले को तब तक प्राथमिकता दी जानी चाहिए जब तक कि चिकित्सा साक्ष्य मौखिक साक्ष्य को पूरी तरह से खारिज नहीं कर देता है, लेकिन जब चिकित्सा साक्ष्य विशेष रूप से चोट लगने के दावे को चश्मदीद गवाह के संस्करण के अनुसार, खारिज कर देता है, तो अदालत इस प्रभाव का प्रतिकूल निष्कर्ष निकाल सकती है कि अभियोजन पक्ष का संस्करण विश्वसनीय नहीं है।

8. दूसरे मामले के अपीलार्थी के विद्वान वकील ने आगे कहा है कि यह बहुत आश्चर्य की बात है कि घनी आबादी वाले गाँव में, किसी ने भी पीड़ित लड़की को सुबह बेहोश अवस्था में ले जाते या उसके घर वापस लाते नहीं देखा था।दूसरे मामले के अपीलार्थी के विद्वान वकील ने ***राजू और अन्य बनाम मध्य प्रदेश राज्य, (2008) 15 एस. सी. सी. 133***, में सूचित, के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए फैसले पर भरोसा किया है यह तर्क देने के लिए कि हालांकि यह दृष्टि नहीं छोड़ी जा सकती है कि बलात्कार पीड़ित को सबसे अधिक पीड़ा और अपमान का कारण बनता है, लेकिन साथ ही बलात्कार का एक झूठा आरोप आरोपी को भी समान रूप से पीड़ा, अपमान और क्षति का कारण बन सकता है, इसलिए आरोपी को भी झूठे निहितार्थ की संभावना से बचाया जाना चाहिए, विशेष रूप से जहां बड़ी संख्या में आरोपी शामिल हैं, हालांकि व्यापक सिद्धांत यह है कि एक घायल गवाह, जो उस समय मौजूद है जब घटना हुई थी, वह वास्तविक हमलावरों के बारे में झूठ नहीं बोलेगा, लेकिन यह मानने के लिए कोई अनुमान/उपधारणा या कोई आधार नहीं है कि ऐसे गवाह का बयान हमेशा सही होता है या बिना किसी अलंकरण या अतिशयोक्ति के।

9. दूसरे मामले के अपीलार्थी के विद्वान वकील ने इसके बाद माननीय शीर्ष द्वारा दिए गए निर्णय ***संतोष प्रसाद @संतोष कुमार बनाम बिहार राज्य के मामले, जो (2020) 3 एस. सी. सी. 443*** में रिपोर्ट किया गया है, पर भरोसा

किया है यह प्रस्तुत करने के लिए कि यदि अभियोजिका का एकल संस्करण विश्वास को प्रेरित नहीं करता है और पूरी तरह से भरोसेमंद, बेदाग और उत्कृष्ट गुणवत्ता का प्रतीत नहीं होता है, तो इसे उसके अंकित मूल्य पर एक सुसमाचार सत्य/निर्विवाद सत्य कथन के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए और किसी अन्य सहायक साक्ष्य के अभाव में, दोषसिद्धि को बनाए नहीं रखा जाना चाहिए और इसके विपरीत अभियुक्त को संदेह का लाभ दिया जाना चाहिए।

10. दूसरे मामले के अपीलार्थी के विद्वान वकील ने इसके बाद माननीय शीर्ष द्वारा दिए गए निर्णय पर भरोसा किया है, जो ***मानक चंद @मणि बनाम हरियाणा राज्य के मामले में, 2023 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 1397*** में रिपोर्ट किया गया है, यह तर्क करने के लिए कि ऐसे मामलों में जहां अभियोजक/पीडिता की आयु एक महत्वपूर्ण कारक है, अभियोजक/पीडिता की आयु के निर्धारण के लिए अस्थि अस्थीकरण परीक्षण किया जाना चाहिए। हालाँकि, वर्तमान मामले में, न तो अस्थि ऑसिफिकेशन टेस्ट किया गया है और न ही रेडियोलॉजिकल रिपोर्ट रिकॉर्ड में है, इसलिए अभियोजक/पीडिता के घटना के समय नाबालिग होने का तथ्य ही स्वयं संदिग्ध है, इसलिए, अपीलार्थी को संदेह का लाभ दिया जाना चाहिए।

11. इसके विपरीत, राज्य के विद्वान ए. पी. पी. श्री दिलीप कुमार सिन्हा ने प्रस्तुत किया है कि पीड़ित लड़की का फरदबेयान, उसका पुनः कथन/बयान और धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दर्ज किया गया उसका बयान सुसंगत है और अपीलार्थियों के अपराध को साबित करने के लिए पर्याप्त है।यह आगे प्रस्तुत किया जाता है कि पी. डब्ल्यू. 1 से पी. डब्ल्यू. 4 को छोड़कर सभी गवाहों ने मामले का समर्थन किया है, उनकी गवाही सुसंगत है और कोई विरोधाभास मौजूद नहीं है।यह भी प्रस्तुत किया जाता है कि अपीलकर्ताओं ने एक जघन्य अपराध किया है और अभिलेखों से यह पता चलता है कि अपीलकर्ताओं को कथित अपराध से जोड़ने के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है, इसलिए उनकी दोषसिद्धि और सजा को बरकरार रखा जाना चाहिए।राज्य के विद्वान ए. पी. पी. ने आगे प्रस्तुत किया है कि विद्वान विचारण न्यायाधीश ने अभिलेख पर उपलब्ध सामग्री पर विचार करके विवादित निर्णय और दोषसिद्धि

और सजा का आदेश पारित किया है और यह एक तर्कपूर्ण आदेश है।अतः दोनों अपीलें खारिज किए जाने के योग्य हैं।

12. पक्षों के विद्वान वकील को सुनने के अलावा, हमने मौखिक और दस्तावेजी दोनों साक्ष्यों का बारीकी से अध्ययन किया है।आगे बढ़ने से पहले, साक्ष्य पर संक्षिप्त रूप से चर्चा करना आवश्यक है।

13. पी. डब्ल्यू. 1 सिकंदर रविदास, पी. डब्ल्यू. 2 बिंदेश्वरी पासवान, पी. डब्ल्यू. 3 पप्पू यादव और पी. डब्ल्यू. 4 मोती यादव सभी ने अपनी गवाही में कहा है कि उन्होंने सुना था कि रमाकांत मंडल की बेटी के संबंध में किसी परेशानी के कारण कुछ झगड़ा हुआ था, लेकिन उन्होंने इस घटना के बारे में कुछ भी जानने से इनकार किया है।फिर भी, उन्होंने कहा है कि वे अभियुक्त व्यक्तियों को पहचानते हैं।

14. पी. डब्ल्यू. 5 मुनीलाल मंडल पीड़ित लड़की के दादा हैं, जिन्होंने अपने बयान में कहा है कि पीड़ित लड़की उनकी पोती है।यह घटना लगभग एक साल पुरानी है।घटना की तारीख को, उनकी पोती 13-14 वर्ष की थी, जिस दिन परिवार के सदस्य मकई की फसल की कटाई के लिए गए थे और जब उनकी पोती घर नहीं लौटी थी, तो उन्होंने उसकी तलाश की थी, लेकिन पता नहीं चल सका कि वह कहाँ है।सुबह उनका पोता और भतीजा गंगा नदी के किनारे अपनी पोती की तलाश में गए थे, जहाँ उन्होंने उसे बेहोशी की हालत में पाया और फिर वे उसे घर वापस ले आए थे।इसके बाद, उक्त गवाह की पोती ने पी. डब्ल्यू. 5 को बताया कि वह मिर्च तोड़ने गई थी, जहां रवि रोशन यादव (पहले मामले के अपीलकर्ता संख्या 2), अंकुश यादव, कुंदन यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलकर्ता) और अमन यादव (पहले मामले के अपीलकर्ता संख्या 1) आए थे, उन्होंने उसका मुंह दबाया और उसे मकई के खेत में ले गए जहां उन्होंने उसके साथ बलात्कार किया था और फिर उन्होंने उसे गंगा नदी के किनारे फेंक दिया था।पी. डब्ल्यू. 5 ने यह भी कहा है कि पीड़ित लड़की का बयान दर्ज किया गया था और डॉक्टरों ने उसकी जांच भी की थी और एक साल बाद उसने बाथरूम में फांसी लगा ली थी और उसकी मौत हो गई थी।पी. डब्ल्यू. 5 ने सभी अभियुक्त व्यक्तियों की पहचान की थी,

जो कटघरे में खड़े थे, अर्थात् कुंदन यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी), रवि रोशन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी संख्या 2) और अमन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी संख्या 1)।

15. पी. डब्ल्यू. 6 सौहाद्री देवी पीडित लडकी की मां है, जिन्होंने अपने साक्ष्य में कहा है कि घटना दो साल पहले की है और पीडिता उनकी बेटी है जो उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन उसके साथ मक्का के खेत में फसल काटने गई थी और कुछ समय बाद उन्होनें उसे खाना बनाने के लिए घर वापस भेज दिया गया था, हालांकि चूंकि मिर्च उपलब्ध नही थी, इसलिए वह मिर्च तोड़ने बासा गई थी और जब मिर्च तोड़ने के बाद वापस आ रही थी, तो चार लडके रवि रोशन यादव (पहले मामले की अपीलकर्ता संख्या 2), कुंदन यादव (दूसरे मामले की एकमात्र अपीलकर्ता), अंकुश यादव और अमन यादव (पहले मामले की अपीलकर्ता संख्या 1) ने उसे पकड़ लिया था और उसे जबरन मकई के खेत में ले गए थे, जहां उन्होंने उसके साथ बलात्कार किया था, जिससे उसकी बेटी बेहोश हो गई थी और फिर उक्त चार अभियुक्तों ने उसकी बेटी को नदी के किनारे फेंक दिया था। पी. डब्ल्यू. 6 ने आगे कहा है कि शाम को वह मकई की फसल काटकर अपने घर गई थी और अपनी छोटी बेटी से पीड़ित लड़की के बारे में पूछा था, जिसके बाद उसने उसे बताया कि वह खेत में मिर्च तोड़ने गई थी लेकिन वापस नहीं आई। इसके बाद, खोजबीन की गई लेकिन पीड़ित लड़की नहीं मिली। अगले दिन पी. डब्ल्यू. 6 के बेटे नवीन कुमार को पी. डब्ल्यू. 6 की बेटी की तलाश करने के लिए भेजा गया, जिसने उसे नदी के किनारे बैठा पाया, जिसके बाद वह उसे घर वापस ले आया और पूछे जाने पर पीड़ित लड़की ने पूरी घटना पी. डब्ल्यू. 6 को सुनाई। पीड़ित लड़की के परिवार के सदस्य तब लड़कों की माँ और पिता के पास गए थे, लेकिन उन्होंने उन्हें जो कुछ भी करना चाहते हैं वह करने के लिए कहा। घटना के समय पीड़ित लड़की की उम्र 14 साल थी और वह आठवीं कक्षा में पढ़ रही थी। डॉक्टर ने पीड़ित लड़की की मेडिकल जांच कराई थी। पीड़ित लड़की का कहलगाँव में एक निजी अस्पताल में भी इलाज किया गया था। पी. डब्ल्यू. 6 ने कठघरे में खड़े सभी अभियुक्त व्यक्तियों को पहचान लिया था। जिरह में, पी. डब्ल्यू. 6 ने कहा है कि घटना के चार दिन बाद पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया था

और वह अपनी बेटी के साथ पुलिस स्टेशन गई थी जहाँ पीड़ित लड़की द्वारा लिखित रिपोर्ट दर्ज की गई थी। पी. डब्ल्यू. 6 ने इस बात से इनकार किया है कि रिपोर्ट में कुंदन यादव का नाम मौजूद नहीं था। पी. डब्ल्यू. 6 ने यह भी कहा है कि पीड़ित लड़की के परिवार के किसी भी सदस्य ने आरोपी व्यक्तियों को पीड़ित लड़की को ले जाते नहीं देखा था।

16. पीडब्लू 7 रमाकांत मंडल पीड़ित लड़की के पिता हैं, जिन्होंने अपने साक्ष्य में कहा है कि यह घटना दो साल पुरानी है। पीड़ित लड़की उसकी बेटी है और घटना के समय उसकी बेटी 14 साल की थी। उन्होंने कहा है कि यह घटना 29.07.2020 की शाम करीब 6 बजे हुई थी और उस दिन चार लड़कों- कुंदन यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी), अमन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी नंबर 1), रवि रोशन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी नंबर 2) और अंकुश यादव ने उनकी बेटी के साथ बलात्कार किया था और फिर उसे गंगा नदी के किनारे फेंक दिया था और उस समय वह साहेबगंज में था, हालांकि जब वह वापस आया तो उसकी बेटी ने उपरोक्त सभी चार अभियुक्तों के नाम बताए, जिसने पीड़ित लड़की को उसके बासा से मकई के खेत में ले गए थे और उसके साथ बलात्कार किया था, जिसके बाद उसे गंगा नदी के किनारे फेंक दिया गया था। पीडब्लू 7 ने आगे कहा है कि वह तब अपनी बेटी को पुलिस स्टेशन ले गया था और मामला दर्ज कराया था। पी. डब्ल्यू. 7 ने लिखित शिकायत पर उनकी बेटी के हस्ताक्षर को मान्यता दी थी, जिसे प्रदर्श-पी1/पी. डब्ल्यू. 7 के रूप में प्रदर्शित किया गया है। दिनांक 15.07.2020 को जब पी. डब्ल्यू. 7 की बेटी घर में सो रही थी तो पी. डब्ल्यू. 7 अपनी रोजी-रोटी कमाने साहेबगंज गया था और इस बीच अज्ञात लोगों ने उसकी बेटी की हत्या कर बाथरूम में फांसी लगा दी थी। पी. डब्ल्यू. 7 ने कठघरे में खड़े सभी अभियुक्त व्यक्तियों को पहचान लिया था। जिरह में, पी. डब्ल्यू. 7 ने कहा है कि वह 30 तारीख को साहेबगंज से लौटा था, जिसके बाद उसकी बेटी ने घटना के बारे में खुलासा किया था और फिर 04.08.2020 पर पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया था। पी. डब्ल्यू. 7 ने कहा है कि शुरुआती समय में वह कोई मामला दर्ज नहीं करना चाहते थे, हालांकि चार दिन पहले पुलिस स्टेशन में सनहा दिया गया था और प्रभारी अधिकारी मामले को निपटाने की

कोशिश कर रहे थे।पी. डब्ल्यू. 7 ने यह भी कहा है कि वह अपनी बेटी के साथ मामला दर्ज करने गए थे और उनकी बेटी की लिखित रिपोर्ट के आधार पर मामला दर्ज किया गया था। पी. डब्ल्यू. 7 ने यह भी कहा है कि उन्होंने पुलिस अधीक्षक को एक लिखित शिकायत दी थी कि पुलिस स्टेशन पिछले चार दिनों से लिखित रिपोर्ट स्वीकार नहीं कर रहा है। पी. डब्ल्यू. 7 ने आगे कहा है कि वह मामला जो पुलिस थाने में दर्ज किया गया था, उस मुकदमे में कुंदन यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलकर्ता) का नाम नहीं था क्योंकि वह दबाव में था और बदमाशों ने बखिया में उसके बहनोई को घेर लिया था, लेकिन इस संबंध में कोई शिकायत नहीं की गई और न ही अदालत में कोई मामला दर्ज किया गया। पी. डब्ल्यू. 7 ने यह भी कहा है कि उसका बयान पुलिस द्वारा दर्ज किया गया था, हालांकि, उसने कुंदन यादव के नाम का खुलासा नहीं किया था क्योंकि वह दबाव में था।घटना के समय उसका बेटा, भतीजा और उसकी पत्नी घर पर थे।पी. डब्ल्यू. 7 ने आगे कहा है कि यदि उनकी बेटी ने आत्महत्या की है, तो यह वर्तमान मामले के कारण है और उनके भाई लक्ष्मीकांत मंडल ने पीड़ित लड़की द्वारा की गई आत्महत्या के संबंध में मामला दर्ज किया था। पी. डब्ल्यू. 7 ने इस सुझाव से इनकार किया है कि वे कुंदन यादव के खेत में चराई के लिए मवेशियों को छोड़ देते थे, जिससे उनके बीच विवाद हो गया था और इस तरह के विवाद के कारण कुंदन यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी) को मामले में झूठा फंसाया गया है।

17. पीडब्लू 8 अमरजीत कुमार मंडल पीड़ित लड़की का भाई है, जिसने अपने साक्ष्य में कहा है कि यह घटना दो साल पुरानी है। 29.07.2020 की शाम करीब 6 बजे उसकी बहन बास में मिर्च तोड़ने गई थी और वहां से गायब हो गई थी।तलाश करने पर वह नहीं मिली। अगले दिन सुबह, जब वह आराम करने के लिए पुल की ओर जा रहा था, तो उसने अपनी बहन को गंगा नदी के तट पर बेहोश अवस्था में पड़ा पाया, जिसके बाद वह उसे अपने घर वापस ले आया था, जहाँ उसने अपनी माँ को घटना के बारे में बताया था।पी. डब्ल्यू. 8 ने कहा है कि उसकी बहन ने खुलासा किया था कि अंकुश कुमार, रवि रोशन यादव (पहले मामले की अपीलकर्ता संख्या 2), अमन यादव (पहले

मामले की अपीलकर्ता संख्या 1) और कुंदन यादव (दूसरे मामले की एकमात्र अपीलकर्ता) ने मिलकर उसके साथ बलात्कार किया था।घटना के बाद पंचायत द्वारा मध्यस्थता की गई, हालांकि आरोपी व्यक्ति नहीं आए और उनके परिवार के सदस्य भी नहीं आए, जिसके बाद पुलिस स्टेशन को सूचित किया गया और मामला दर्ज किया गया।पी. डब्ल्यू. 8 ने कटघरे में मौजूद अमन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी नंबर 1), रवि रोशन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी नंबर 2) और कुंदन यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी) की पहचान की थी।पी. डब्ल्यू. 8 ने आगे कहा है कि लगभग एक साल के बाद, यानी 15.07.2021 को उनकी बहन की हत्या कर दी गई और शौचालय में फांसी लगा दी गई, जब वह घर पर नहीं थे।

18. जिरह में पी. डब्ल्यू. 8 ने कहा कि घटना की तारीख को उसकी बहन घर वापस नहीं आई थी और वे पूरी रात उसकी तलाश कर रहे थे, लेकिन उन्होंने पुलिस स्टेशन को कोई जानकारी नहीं दी थी। घटना की रात में, घटना के बारे में मुखिया/सरपंच को कोई जानकारी नहीं दी गई, लेकिन सुबह उनके पिता ने जानकारी दी।पी. डब्ल्यू. 8 ने यह भी कहा है कि उनके पिता साहेबगंज में काम कर रहे थे और सुबह लगभग 8 बजे लौटे थे। उन्होंने कहा है कि घटना के छह दिन बाद 04.08.2020 पर मामला दर्ज किया गया था। पी. डब्ल्यू. 8 ने अपनी जिरह में कहा है कि उसने आरोपी व्यक्तियों को अपनी बहन को ले जाते हुए नहीं देखा है और जब वह सुबह आराम करने गया था, तो नितीश भी उसके साथ था, जो उसका ममेरा-भाई है।उसने कहा है कि जब उसकी बहन गंगा नदी के तट पर मिली तो उसने उसे या उसके ममेरा-भाई को कुछ नहीं बताया था, बल्कि आरोपी व्यक्तियों के नाम उसकी मां को बताए थे। उसने कहा है कि पुलिस ने उसका बयान दर्ज किया था और यह तथ्य नहीं है कि उसने पुलिस के सामने कुंदन यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी) का नाम नहीं लिया था। पी. डब्ल्यू. 8 ने अपनी जिरह में यह भी कहा है कि उसे नहीं पता कि उसकी बहन की हत्या किसने की थी और उसे फांसी पर लटका दिया था।उन्होंने कहा है कि कुंदन कुमार (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी) उसके घर से 15-20 घरों दूर में रहते हैं। उन्होंने इस सुझाव का खंडन किया है कि कुंदन को वर्तमान मामले में गलत तरीके से

फंसाया गया है क्योंकि उनके पिता सुरेंद्र यादव ने पी. डब्ल्यू. 8 के पिता के खिलाफ ग्राम कछारी के समक्ष शिकायत दर्ज कराई थी, जिसके प्रभाव से की पी. डब्ल्यू. 8 के पिता मवेशियों को चराने के लिए खेत में छोड़ देते हैं।अपनी प्रतिपरीक्षा में, पी. डब्ल्यू. 8 ने आगे कहा है कि उन्होंने अपनी बहन की आत्महत्या के संबंध में अपने चाचा द्वारा दायर शिकायत को नहीं पढ़ा है और यह भी नहीं जानते कि मामला संख्या 01/2021 है। उन्होंने इस सुझाव का खंडन किया है कि सह-दोषी के पिता अमन उनके साथ झगड़ा करते थे, जिसके कारण झूठा मामला दर्ज किया गया है।

19. पी. डब्ल्यू. 9 मुकेश कुमार ने अपने साक्ष्य में कहा है कि यह घटना 04.08.2020 की है, जब वह कहलगांव में N.T.P.C पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी के रूप में तैनात थे। पी. डब्ल्यू. 9 ने पी. डब्ल्यू. 9 को एकचारी पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी के रूप में कार्यभार 14.09.2020 को संभाला था और 16.09.2020 को उन्होंने पुलिस उप-निरीक्षक, मणिभूषण कुमार से एकचरी पी.एस. केस संख्या 18, 2020 की जांच का कार्यभार संभाला था। पी. डब्ल्यू. 9 ने कुंदन यादव को गिरफ्तार किया था, जिसे उसने अदालत में मान्यता दी थी/पहचाना था।पी. डब्ल्यू. 9 ने आगे कहा है कि सभी पहलुओं पर जांच पूरी करने के बाद, उन्होंने 29.09.2020 की तारीख को सी. एस. No.25/2020 के तहत भा.द.सं. की धारा 376, पॉक्सो अधिनियम की धारा 4 और अधिनियम, 1989 की धारा 3 (1) (आर) (एस) (डब्ल्यू) (2)/3 (2) (वी) के तहत अमन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी संख्या 1), रवि रोशन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी संख्या 2) और कुंदन यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी) के खिलाफ आरोप पत्र प्रस्तुत किया था। पी. डब्ल्यू. 9 ने आरोप पत्र पर अपने लेखन और हस्ताक्षर की पहचान की है, जिसे प्रदर्श-पी/2/पी. डब्ल्यू. 9 के रूप में चिह्नित किया गया है। जिरह में, पी. डब्ल्यू. 9 ने कहा है कि उन्होंने केस डायरी को देखने के बाद आरोप पत्र प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा है कि लिखित रिपोर्ट पर, केवल पीड़ित लड़की के हस्ताक्षर मौजूद हैं और उक्त लिखित शिकायत को देखने पर, ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी और द्वारा लिखा गया है और उसके बाद, पीड़ित लड़की

ने उसी पर हस्ताक्षर किए थे। जिस व्यक्ति ने लिखित शिकायत लिखी है, उसका नाम उस पर नहीं लिखा है।

20. पी.डब्लू. 10 विकास यादव ने अपने बयान में कहा है कि यह घटना 2 से 3 साल पुरानी है। रमाकांत मंडल की बेटी का नितीश कुमार के साथ प्रेम संबंध था और उन्होंने इसके बारे में अफवाहें सुनी थीं। वास्तव में, नितीश कुमार रमाकांत मंडल की बेटी के साथ भाग गए थे, लेकिन पीड़ित लड़की वापस नहीं आई और उसकी वहीं मौत हो गई। पी.डब्लू.10 ने कहा है कि वह नितीश कुमार को जानते हैं। जिरह में, पी.डब्लू.10 ने कहा है कि उसे पता नहीं है कि पीड़ित लड़की को कौन ले गया था, हालांकि, वह जानता है कि पीड़ित लड़की ने फांसी लगा ली थी और उसकी मृत्यु हो गई थी। पी.डब्लू.10 ने यह भी कहा है कि नितीश कुमार पीड़ित लड़की के ममेरा-भाई हैं और गाँव में अफवाह थी कि पीड़ित लड़की गर्भवती हो गई थी लेकिन नितीश कुमार ने उससे शादी करने से इनकार कर दिया।

21. पी.डब्लू.11 मणिभूषण कुमार वर्तमान मामले के जांच अधिकारी हैं और उन्होंने अपने साक्ष्य में कहा है कि 04.08.2020 को उन्हें एकचारी पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी के रूप में तैनात किया गया था और 04.08.2020 को उन्होंने 2020 के एकचारी पी. एस. मामले No.18 की जांच की थी, जिसके बाद उन्होंने घटना स्थल का निरीक्षण किया था जो कि बड़ी चटैया, भागलपुर में अजीत झा के मिर्च के खेत में स्थित है। पी.डब्लू.11 ने कहा है कि घटना का पहला स्थान उत्तर में केशरी कांत झा के मकई के खेत से, दक्षिण में ऋषिधर झा के मिर्च के खेत से, पूर्व में उमेश चंद्र के मकई के खेत से और पश्चिम में फुदय यादव @फुडो के मिर्च के खेत से घिरा हुआ है। पी.डब्लू.11 ने यह भी कहा है कि वर्तमान मामले की घटना का दूसरा स्थान केशरी कांत झा का मकई का खेत है, जो उत्तर में अजीत झा के मिर्च के खेत से और दक्षिण में नीलमणि झा के खेत से, पूर्व में केशरी कांत झा के घर से और पश्चिम में राम खेलावन यादव के मिर्च के खेत से घिरा हुआ है। तीसरा स्थान गंगा नदी के तट के पास बड़ी चटैया में स्थित है जहां उत्तर में गंगा नदी स्थित है, दक्षिण में नदी बह रही है, पूर्व में गाँव की कंक्रीट सड़क स्थित है, पश्चिम में ऋषिधर झा का खेत मौजूद है और उत्तर और दक्षिण की ओर,

नदी बह रही है। पी.डब्लू.11 ने सहोदी देवी, रमाकांत मंडल, नितीश कुमार, अमरजीत मंडल, सिकंदर रविदास, बिंदेश्वरी पासवान, कम्पू यादव, मोती यादव, विकास कुमार, लक्ष्मीकांत मंडल और मुनीलाल मंडल से पूछताछ की और उनके बयान दर्ज किए। पीड़ित लड़की की चिकित्सा जांच भी की गई और उप-निरीक्षक द्वारा धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत उसका बयान दर्ज किया गया, जिसके बाद पीड़िता लड़की का बयान धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत विद्वान अदालत के समक्ष दर्ज किया गया।

22. पी.डब्लू.11 भी जाँच अधिकारी में से एक है, जिन्होंने आरोपी अमन यादव और रवि रोशन यादव को गिरफ्तार करने का दावा किया है, जिन्हें उन्होंने अदालत में पहचाना था। पी.डब्लू.11 ने आगे कहा है कि विद्वान न्यायालय ने अपनी उपस्थिति में पीड़ित लड़की को उसकी माँ को सौंप दिया था। अपनी प्रतिपरीक्षा में, पी.डब्लू. 11 ने कहा है कि जांच को संभालने और पीड़ित लड़की की लिखित शिकायत को देखने के बाद, उसने एक मामला दर्ज किया था और वहां कुंदन कुमार (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलार्थी) का नाम मौजूद नहीं था और वास्तव में पीड़ित लड़की ने अपने पुनः बयान में कुंदन कुमार का नाम भी नहीं लिया था। पी.डब्लू.11 ने यह भी कहा है कि न तो पीड़ित लड़की की मां और न ही गवाह रमाकांत मंडल, नितीश कुमार और अमरजीत मंडल ने उसके सामने दिए गए अपने बयानों में कुंदन का नाम लिया था। पी.डब्लू.11 ने घटना स्थल के आसपास के क्षेत्र से संबंधित व्यक्तियों का बयान भी दर्ज किया था, हालांकि, उन्होंने भी कुंदन का नाम नहीं लिया था।जहां तक पीड़ित लड़की का सवाल है, उसने अपने धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत दिए गए बयान में कुंदन कुमार का नाम भी नहीं लिया था।पी.डब्लू.11 ने आगे कहा है कि अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा अभियोजन पक्ष के सदस्यों को धमकी दिए जाने के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं दी गई थी। पी.डब्लू.11 ने कहा है कि हालांकि मौखिक रूप से सूचित किया गया था कि आरोपी व्यक्ति पीड़ित लड़की के परिवार के सदस्यों को धमकी दे रहे थे, लेकिन कोई लिखित शिकायत नहीं की गई थी।

23. पी.डब्लू.11 ने मुखिया/सरपंच का बयान दर्ज करने से इनकार किया है। पी.डब्लू.11 ने इस बात से भी इनकार किया है कि आरोपी कुंदन ने कुंदन

के खेत में स्थित फसलों को चराने के लिए पीड़ित लड़की के परिवार के सदस्यों के मवेशियों के संबंध में 05.06.2020 पर ग्राम कछारी, खवासपुर के सरपंच के समक्ष आवेदन किया था और इसी वजह से उनके बीच झगड़ा हो गया था। पी.डब्लू.11 ने स्वीकार किया है कि मेडिकल रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि पीड़ित लड़की छह सप्ताह और दो दिन की गर्भवती है और घटना के एक सप्ताह के भीतर मेडिकल जांच की गई थी। पी.डब्लू.11 ने कहा है कि उसने इस बात की जांच नहीं की गई थी कि पीड़ित लड़की के गर्भ में बच्चे का पिता कौन है और रिश्ते के संबंध में भी, पीड़ित लड़की का अपने चचेरे भाई, अर्थात् नितीश कुमार के साथ क्या संबंध था। पी.डब्लू.11 ने यह भी कहा है कि उसे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि पीड़ित लड़की ने आत्महत्या की थी या नहीं। पी.डब्लू.11 ने पीड़ित लड़की के पिता और आरोपी व्यक्तियों के परिवार के सदस्यों के बीच विवाद के संबंध में जांच करने से भी इनकार किया है।

24. पी.डब्लू.12 लक्ष्मीकांत मंडल पीड़ित लड़की के चाचा हैं, जिन्होंने अपने साक्ष्य में कहा है कि यह घटना 29.09.2020 की है जब वह साहेबगंज में थे और जब वह साहेबगंज से बड़ी चटैया स्थित अपने घर आए तो उनकी भतीजी ने उन्हें बताया कि जब वह बासा से अपने घर आ रही थी तो चार लड़के अमन यादव (पहले मामले के अपीलकर्ता नंबर 1), रवि रोशन यादव (पहले मामले के अपीलकर्ता नंबर 2), अंकुश यादव और कुंदन कुमार यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलकर्ता) ने उसे पकड लिया था और उसके साथ बलात्कार किया। इसके बाद, पंचायत आयोजित की गई, हालांकि, अभियुक्त व्यक्तियों ने पंचायत में लिए गए निर्णय पर ध्यान नहीं दिया। तब पी.डब्लू.12 का भाई पुलिस स्टेशन गया था, लेकिन प्रभारी अधिकारी ने लिखित रिपोर्ट रखी थी, लेकिन मामले को आगे नहीं बढ़ाया, जिसके बाद उप पुलिस अधीक्षक के समक्ष शिकायत की गई, और उसने दबाव बनाया, तो मामला दर्ज किया गया। पी.डब्लू.12 ने कहा है कि जब पीड़ित लड़की ने 15.06.2021 पर आत्महत्या की थी, तो पुलिस के लोगों ने उन्हें जबरन यह लिखने के लिए मजबूर किया था कि पीड़ित लड़की ने आत्महत्या कर ली है। पी.डब्लू.12 ने कटघरे में खड़े चार अभियुक्तों को पहचान लिया था।जिरह में, पी.डब्लू.12 ने

कहा है कि वह भी अपने भाई के साथ मामला दर्ज करने के लिए पुलिस स्टेशन गया था और मामला उसके भाई रमाकांत मंडल (पी. डब्ल्यू. 7) द्वारा दर्ज किया गया था। पी.डब्लू.12 ने इस बात की जानकारी होने से इनकार किया है कि उनकी भतीजी ने किसके खिलाफ मामला दर्ज किया था। उन्होंने यह भी कहा है कि शिकायत में कुंदन का नाम नहीं लिया गया था क्योंकि उन्होंने पीड़ित लड़की के मामा के माथे पर बंदूक रखी थी। पी.डब्लू.12 ने आगे कहा है कि उसका बयान पुलिस द्वारा दर्ज नहीं किया गया था और उसके द्वारा जो कुछ भी कहा गया है वह वर्तमान गवाही के माध्यम से अदालत में कहा गया है। उन्होंने यह भी कहा है कि उनकी भतीजी द्वारा की गई आत्महत्या के संबंध में दर्ज मामले में यह नहीं कहा गया है कि कुंदन और अन्य अभियुक्त व्यक्तियों ने मिलकर उनकी भतीजी की हत्या की थी और फिर उसे फांसी पर लटका दिया था और इसे आत्महत्या का मामला दिखाया था। उन्होंने अपने बयान के दौरान गलत तथ्यों को बताने से इनकार किया है। पी.डब्लू.12 ने अपनी प्रतिपरीक्षा में यह भी कहा है कि मामला उनके भाई द्वारा पुलिस स्टेशन में दायर किया गया था, जिस पर पीड़ित लड़की ने अपने हस्ताक्षर कर लिए थे। इसके बाद उन्होंने कहा कि उनके भाई द्वारा दायर रिपोर्ट को प्रभारी अधिकारी द्वारा बदल दिया गया था, जिन्होंने खुद से एक रिपोर्ट लिखी थी और फिर पीड़ित लड़की ने उसी पर हस्ताक्षर किए थे। पी.डब्लू.12 ने अपनी प्रतिपरीक्षा में आगे कहा है कि जब उसकी भतीजी ने फांसी लगा ली थी, तो उसने हसुआ से रस्सी काटकर उसे नीचे गिरा दिया था। उन्होंने यह भी कहा है कि यह तथ्य नहीं है कि उन्होंने और उनकी साली ने पीड़ित लड़की की हत्या की थी, इसलिए पोस्टमार्टम नहीं किया गया था। उसने इस बात से भी इनकार किया है कि उसकी भतीजी का नितीश कुमार के साथ प्रेम संबंध था और यही कारण है कि वह गर्भवती हो गई थी, जिसके कारण उसने फांसी लगा ली।

25. पी.डब्लू.13 नितीश कुमार पीड़ित लड़की का चचेरा भाई है, जिसने अपने साक्ष्य में कहा है कि यह घटना दो साल पुरानी है और घटना की तारीख को वह बड़ी चटैया में था जहाँ उसके नानी का घर स्थित है। उसने कहा है कि पीड़ित लड़की उसकी ममेरी-बहन है और घटना की तारीख को

पीड़ित लड़की मिर्च लाने के लिए खेत में गई थी, लेकिन वह वापस नहीं लौटी, जिसके बाद उसकी तलाश की गई लेकिन वह नहीं मिली। सुबह, पी.डब्लू.13 और अमरजीत कुमार (पीडब्लू. 8) पीड़ित लड़की की तलाश में गए थे और जब वे नदी के किनारे पहुंचे, तो उन्होंने पीड़ित लड़की को वहाँ बेहोश पड़ा पाया, जिसके बाद उन्होंने उसे उठाया और उसे घर वापस लाया और जब उसे घर पर होश आया, तो पूछताछ करने पर उसने खुलासा किया कि चार लड़कों, अमन यादव (पहले मामले के अपीलकर्ता नंबर 1), रवि रंजन यादव (पहले मामले के अपीलकर्ता नंबर 2), अंकुश यादव और कुंदन यादव (दूसरे मामले के एकमात्र अपीलकर्ता) ने मिलकर उसके साथ बलात्कार किया था।जिरह में, पी.डब्लू.13 ने कहा है कि उसने पुलिस को यह नहीं बताया था कि 30.07.2020 की सुबह लगभग 4 बजे जब वह अमरजीत मंडल के साथ गंगा कचार के पास चटैया पुल के नीचे एक जगह पर आराम करने गया था, तो उन्होंने पीड़ित लड़की को जलेबी के पेड़ के पास खड़ा देखा था और उससे पूछने पर, उसने उस समय कुछ नहीं कहा था और जब वे अमरजीत मंडल के साथ घर पहुंचे, तो पीड़ित लड़की ने अपनी मां को घटना के बारे में बताया था। उन्होंने आगे कहा है कि यह तथ्य नहीं है कि उन्होंने अपने बयान में पुलिस को नहीं बताया था कि पीड़ित लड़की ने अपनी मां के समक्ष कुंदन यादव का नाम नहीं लिया था। पी.डब्लू.13 ने इस बात से भी इनकार किया है कि उसने पुलिस के सामने कुंदन का नाम नहीं लिया था और उसने पुलिस को यह नहीं बताया था कि कुंदन भी घटना का हिस्सा है। पी.डब्लू.13 ने यह भी कहा है कि उसे नहीं पता कि पीड़ित लड़की ने मामले में किसका नाम दिया था।पी.डब्लू.13 ने अपनी जिरह में आगे कहा है कि उसने पुलिस को यह नहीं बताया था कि जब वे पीड़ित लड़की की तलाश में गए थे, तो उन्होंने उसे जलेबी के पेड़ के पास खड़ा देखा था और उससे पूछने पर उसने कुछ नहीं बताया था, इसके बजाय उसने पुलिस को बताया था कि पीड़ित लड़की बेहोश थी। पी.डब्लू.13 ने आगे कहा है कि जब वह और अमरजीत पीड़ित लड़की की तलाश करने के बाद, घटना स्थल पर पहुंचे, तो उन्होंने पीड़ित लड़की को बेहोश पाया। उन्होंने यह भी कहा है कि खुद आराम करने के तुरंत बाद, उन्होंने पीड़ित लड़की को बेहोशी की हालत में पाया, जिसके बाद उन्होंने उसे उठाया और उसे घर ले गए जहां वह होश में आ गई। उसने कोई गलती करने

से इनकार किया है जिसके परिणामस्वरूप पीड़ित लड़की गर्भवती हो गई, जिससे वह बेहोश हो गई।

26. पी.डब्लू.14 डॉ. आनंद कुमार मुरारी डॉक्टर हैं, उन्होंने पीड़ित लड़की की उम्र निर्धारित की है और उन्होंने अपने साक्ष्य में कहा है कि 05.08.2020 को उन्हें J.L.N.M.C.H, भागलपुर के रेडियोलॉजी विभाग में रेडियोलॉजिस्ट के रूप में तैनात किया गया था, जिस दिन पीड़ित लड़की को J.L.N.M.C.H, भागलपुर के अधीक्षक ने रेडियोलॉजिकल जांच के लिए अपने विभाग में भेजा था, जिसके बाद उन्होंने ड्यूटी पर अधीनस्थ एक्स-रे तकनीशियन द्वारा पीड़ित की कोहनी और श्रोणि के साथ दोनों कलाई के एक्स-रे की जांच की थी और इस प्रकार राय दी थीः

> "इलियाक क्रेस्ट और त्रिज्या और अलना के दूरस्थ छोरों का एपिफिसिस दिखाई दिया-फ्यूज नहीं हुआ।निष्कर्ष-उपरोक्त रेडियोलॉजिकल आधार पर आयु 14-16 वर्षों के बीच दिखाई देती है।"

पी.डब्लू.14 ने उक्त रिपोर्ट को साबित कर दिया है, जो उनके द्वारा तैयार की गई है और साथ ही उन्होंने अपने लेखन और हस्ताक्षर की पहचान की है, जिसे प्रदर्श पी-3/पीडब्लू 14 के रूप में चिह्नित किया गया है। प्रतिपरीक्षा में, पी.डब्लू.14 ने कहा है कि आयु निर्धारण के उद्देश्यों के लिए, पीड़ित लड़की के शरीर की विभिन्न हड्डियों की उनके द्वारा जांच की गई थी और उसने 14-16 वर्षों के बीच होने वाले आंकड़ों के आधार पर पीड़ित लड़की की आयु निर्धारित की थी। पी.डब्लू.14 ने यह भी कहा है कि पीड़ित लड़की बालिग/वयस्कता के कगार पर नहीं थी।

27. पी.डब्लू.15 डॉ. बीना रानी पोद्दार डॉक्टर हैं, उन्होंने पीड़ित की योनि के स्वाब की जांच की थी। पी.डब्लू.15 ने कहा है कि 05.08.2020 को, उसे J.L.N.M.C.H, भागलपुर में चिकित्सा अधिकारी के रूप में तैनात किया गया था और उस दिन पीड़ित की योनि के स्वाब को अधीक्षक, J.L.N.M.C.H, भागलपुर द्वारा जाँच के लिए उसके विभाग में भेजा गया था और उसी की जाँच के बाद, उसे योनि के स्वाब में कोई शुक्राणु नहीं मिला। पी.डब्लू.15 ने

उक्त रिपोर्ट को साबित किया है और उसके लेखन और हस्ताक्षर की भी पहचान की है, जिसे प्रदर्श पी-4/पीडब्लू 15 के रूप में चिह्नित किया गया है। अपनी प्रतिपरीक्षा में, पी.डब्लू.15 ने कहा है कि योनि स्वैब की जांच के बाद, उसे नष्ट कर दिया जाता है और योनि स्वेब का स्लाइड तैयार किया जाता है और सूक्ष्मदर्शी के माध्यम से जांचा जाता है। उसने कहा है कि वह नहीं जानती कि योनि के स्वाब लेने के कितने दिनों के बाद, उसे भेजा गया था, हालाँकि योनि के स्वाब लेने के दो दिनों के भीतर योनि के स्वाब में शुक्राणु मिलने की संभावना बनी रहती है।

28. पी.डब्लू.16 डॉ. पूनम मिश्रा डॉक्टर हैं, उन्होंने पीड़ित लड़की की चिकित्सकीय जांच की है। पी.डब्लू.16 ने कहा है कि 05.08.2020 को वह उप-मंडल अस्पताल, कहलगांव में चिकित्सा अधिकारी के रूप में तैनात थी और उसने पीड़ित लड़की की उसकी सहमति से और पुलिस स्टेशन के कर्मचारियों की उपस्थिति में लगभग 12.45 पर जाँच की थी और निम्नलिखित पाया थाः

"(ए) दांतों की संख्या-ऊपरी-14 निचला-14

(बी) स्तन विकसित।

((ग) अक्षीय बाल-उपस्थित।

(डी) प्यूबिक बाल-मौजूद।

(ई) शरीर के बाहरी या आंतरिक भाग में हिंसा का कोई संकेत नहीं है।

(च) योनि या वल्वा के बाहरी या आंतरिक भाग या अंडरगारमेंट पर कोई बाहरी बाल मौजूद नहीं होते हैं।

(जी) योनि या वल्वा या अंडरगारमेंट पर कोई बाहरी स्राव मौजूद नहीं होता है।

(एच) J.L.N.M.C.H भागलपुर की पैथोलॉजिकल रिपोर्ट के अनुसार, योनि के फाहे/स्वाब में कोई शुक्राणु नहीं पाया गया।

(I) J.L.N.M.C.H से भेजी गई रेडियोलॉजिकल रिपोर्ट के अनुसार, जाँच किए जाने वाले व्यक्ति की आयु चौदह से सोलह वर्ष के बीच है।

(जे) यू. एस. जी. की रिपोर्ट के अनुसार गर्भ में 6 सप्ताह 2 दिन का अंतर्गर्भाशयी भ्रूण है।

चिकित्सीकीय अनुमान - उपरोक्त चिकित्सीकीय निष्कर्षों के आधार पर बलात्कार का कोई प्रमाण नहीं है।

एम/आई-ऊपरी छाती पर ए तक का निशान।"

पी.डब्लू.16 ने उक्त चिकित्सा रिपोर्ट की पहचान की है और कहा है कि यह उनकी लेखनी में तैयार की गई है और इस पर उनके हस्ताक्षर हैं और इसे प्रदर्श पी5/पीडब्लू16 के रूप में चिह्नित किया गया है।

29. पी.डब्लू.17 चंदा लाल तत्कालीन न्यायिक मजिस्ट्रेट, प्रथम श्रेणी हैं, जिन्होंने पीड़ित लड़की से धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत पूछताछ की थी। पी.डब्लू.17 ने अपने साक्ष्य में कहा है कि 19.08.2020 पर वह भागलपुर में प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट के रूप में तैनात थी और उसने पीड़ित लड़की का बयान कहलगांव एकचारी पी. एस. मामले No.18/2020, पॉक्सो मामले No.81/2020 के संबंध में धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दर्ज किया था। ।पी.डब्लू.17 ने आगे कहा है कि उसने उसकी माँ की उपस्थिति में पीड़ित लड़की का बयान उसके शब्दों में दर्ज किया था और वही उसे उसके द्वारा लिखा गया था, जिसे पीड़ित लड़की और उसकी माँ को पढ़ा दिया गया था, जिसके बाद पीड़ित लड़की और उसकी माँ ने उसी पर अपने हस्ताक्षर किए थे। पी.डब्लू.17 ने पीड़ित लड़की द्वारा धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दिए गए बयान की पहचान की है और कहा है कि वही उसके लेखन में लिखा गया है और साथ ही उसने अपने हस्ताक्षर की पहचान की है, जिसे प्रदर्श पी6/पी.डब्लू17 के रूप में प्रदर्शित किया गया है।प्रतिपरीक्षा में, पी.डब्लू.17 ने कहा है कि उसने वही लिखा था जो पीड़ित लड़की ने उसे बताया था।पीड़ित लड़की ने उसके सामने खुलासा किया था कि 13.07.2020 को अमन यादव (पहले मामले के अपीलार्थी नंबर 1) ने उसके साथ गलत किया था, जिसके बाद अन्य लोगों ने भी उसके साथ गलत किया था।पी.डब्लू.17 ने अपनी प्रतिपरीक्षा में आगे कहा है कि यह सच है कि पीड़ित लड़की का बयान दर्ज करने के समय, उसने पीड़ित लड़की के चेहरे पर अभिव्यक्ति का उल्लेख नहीं किया था।

30. अभियोजन पक्ष के साक्ष्य को बंद करने के बाद, विद्वत निचली अदालत ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के तहत 14.12.2022 को

अपीलार्थियों के बयान दर्ज किए ताकि वे व्यक्तिगत रूप से उनके खिलाफ साक्ष्य में दिखाई देने वाली परिस्थितियों को समझा सकें, हालांकि अपने-अपने बयानों में, उन्होंने खुद को निर्दोष होने का दावा किया।

31. बचाव पक्ष ने तब सबूत पेश किए थे। डी. डब्ल्यू. 1 आनंदी दास ने अपने साक्ष्य में कहा है कि वह वर्ष 2020 में ग्राम पंचायत, खवासपुर के सदस्य थे और उस समय सरपंच रतन देवी थीं। उन्होंने कहा है कि वह कुंदन कुमार यादव के पिता सुरेंद्र यादव उर्फ मंटू यादव को जानते हैं और रमाकांत मंडल के साथ-साथ उनकी बेटी को भी जानते हैं, जो सभी उनकी ग्राम पंचायत से संबंधित हैं। उन्होंने कहा है कि कुंदन कुमार यादव ने ग्राम पंचायत के सरपंच के समक्ष 05.06.2020 को एक आवेदन दिया था, जिसमें उनके हस्ताक्षर के साथ-साथ सरपंच के हस्ताक्षर भी हैं, जिसे उन्होंने पहचाना है और इसे प्रदर्श D1/DW1 और D1/1/DW1 के रूप में चिह्नित किया गया है। जिरह में, डी. डब्ल्यू. 1 ने कहा है कि यह घटना ढाई साल पुरानी है। उन्होंने यह भी कहा है कि यह तथ्य नहीं है कि झूठा दस्तावेज तैयार किया गया है।

32. डी. डब्ल्यू. 2 रोहित कुमार ने अपने साक्ष्य में कहा है कि वह पीड़ित लड़की को जानता है, जिसके पिता का नाम रमाकांत मंडल और भाई का नाम अमरजीत है। उन्होंने कहा है कि अमन कुमार (पहले मामले का अपीलार्थी नंबर 1) एक चालक है। वर्ष 2020 में, वह घर पर रहता था और यह घटना 25-26 जुलाई, 2020 को हुई थी, जिसमें अमन कुमार ने एक बछड़े को मारा था, जिसके बाद रमाकांत/अमरजीत और अमन के बीच हाथापाई हुई थी, हालांकि ग्रामीणों ने मध्यस्थता की और उन्हें शांत किया।जिरह में, डी. डब्ल्यू. 2 ने कहा है कि रोशन (पहले मामले के अपीलार्थी संख्या 2) और अमन (पहले मामले के अपीलार्थी संख्या 1) भाई हैं।

33. डी. डब्ल्यू. 3 मोहन यादव ने अपने साक्ष्य में कहा है कि वह रमाकांत मंडल और पीड़ित लड़की के भाई अमरजीत को जानता है। डी. डब्ल्यू. 3 ने कहा है कि ढाई साल पहले वह गांव में रहता था और वह रमाकांत मंडल, अमरजीत, रोशन (पहले मामले के अपीलकर्ता नंबर 2) और अमन (पहले मामले के अपीलकर्ता नंबर 1) को जानता है।उन्होंने कहा है कि अमन (पहले

मामले का अपीलार्थी नंबर 1) एक चालक है और रोशन (पहले मामले का अपीलार्थी नंबर 2) पढ़ रहा है। उन्होंने यह भी कहा है कि ढाई साल पहले अमन की कार ने एक बछड़े को टक्कर मार दी थी, जो रमाकांत मंडल की थी, जिसके बाद दोनों के बीच हाथापाई हुई थी और दस दिनों के बाद उन्हें पता चला कि रमाकांत ने अपनी बेटी को पीड़ित के रूप में पेश करके आरोपी व्यक्तियों को झूठे मामले में फंसाया है। उन्होंने यह भी कहा है कि रमाकांत के घर पर उनका चचेरा भाई भतीजा रहता है, जिसका नाम नितीश है और रमाकांत की बेटी के नितीश के साथ कुछ आंतरिक संबंध होने की चर्चा है, जिसके कारण पीड़िता ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। जिरह में, डी. डब्ल्यू. 3 ने कहा है कि उसने पीड़ित लड़की को फांसी लगाते हुए नहीं देखा था। उन्होंने यह भी कहा है कि रोशन (पहले मामले का अपीलार्थी नंबर 2) उसका भतीजा है और अमन (पहले मामले का अपीलार्थी नंबर 1) गाँव का भाई है।

34. विचारण न्यायालय ने विचारण में प्रस्तुत साक्ष्य की सराहना, विश्लेषण और जांच पर उपरोक्त अपीलार्थियों को अपराधों का दोषी पाया है और अपने विवादित निर्णय और आदेश द्वारा उन्हें कारावास और जुर्माने की सजा सुनाई है, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है।

35. हमने विद्वान विचारण न्यायालय के विवादित फैसले का अध्ययन किया है, अभिलेख पर उपलब्ध सम्पूर्ण सामग्री और अपीलार्थियों के लिए विद्वान वकील के साथ-साथ राज्य के लिए विद्वान ए. पी. पी. द्वारा की गई प्रतिद्वंद्वी प्रस्तुतियों पर विचारपूर्वक विचार किया है। पहला और सबसे महत्वपूर्ण पहलू जिस पर निर्णय लेने की आवश्यकता है, वह यह है कि क्या उन अपराधों के लिए अपीलार्थियों के अपराध को साबित करने के लिए कोई सबूत रिकॉर्ड पर उपलब्ध है जिनके लिए उन पर आरोप लगाया गया है। पीड़ित लड़की की दिनांकित 04.08.2020 की लिखित रिपोर्ट के एक नंगे अवलोकन से पता चलता है कि 29.07.2020 की शाम को लगभग 6 बजे, पहले मामले के अपीलकर्ता और एक अंकुश कुमार यादव ने पीड़ित लड़की को मकई के खेत के अंदर ले गए थे और उसके साथ बलात्कार किया था और इसी तरह का बयान पीड़ित लड़की द्वारा धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत पुलिस

के समक्ष भी दिया गया है, हालांकि उसने 19.08.2020 को धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत प्रथम श्रेणी के विद्वान न्यायिक मजिस्ट्रेट के समक्ष दिए गए अपने बयान में, उसने एक अलग कहानी सुनाई है कि पहले तो अमन यादव (पहले मामले के अपीलकर्ता संख्या 1) ने उसके साथ गलत किया था और उसके बाद, उपरोक्त दो मामलों के अपीलकर्ताओं और एक अंकुश कुमार यादव ने उसके साथ गलत किया था, जिसके बाद उस पर हमला भी किया गया था, जिससे वह बेहोश हो गई थी, जिसके बाद उसका भाई और परिवार के सदस्य उसे अपने घर ले आए थे। हम यह भी पाते हैं कि पीड़ित लड़की ने 15.06.2021 पर आत्महत्या कर ली थी, इसलिए उससे गवाह के रूप में पूछताछ नहीं की जा सकी।

36. इस प्रकार, हम पाते हैं कि धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत पीड़ित लड़की द्वारा दिए गए बयान को छोड़कर. यानी पी. 6/पी. डब्ल्यू. 17 को प्रदर्शित करें, अपीलार्थियों के अपराध को साबित करने के लिए कोई आपत्तिजनक सामग्री रिकॉर्ड पर उपलब्ध नहीं है।जहां तक पी. डब्ल्यू. 5. मुनीलाल यादव (पीड़ित लड़की के दादा), पी. डब्ल्यू. 6. सौहाद्री देवी (पीड़ित लड़की की मां), पी. डब्ल्यू. 7. रमाकांत मंडल (पीड़ित लड़की के पिता), पी. डब्ल्यू. 8. अमरजीत कुमार मंडल (पीड़ित लड़की के भाई), पी. डब्ल्यू. 12. लक्ष्मीकांत मंडल (पीड़ित लड़की के चाचा) और पी. डब्ल्यू. 13. नितीश कुमार (पीड़ित लड़की के चचेरे भाई) की गवाही का संबंध है, उन सभी ने कहा है कि पीड़ित लड़की का भाई, अर्थात् अमरजीत कुमार मंडल (पी. डब्ल्यू. 8) और पी. डब्ल्यू. 13. नितीश कुमार गंगा नदी के तट के पास 30.07.2020 की सुबह आराम करने गए थे और पीड़ित लड़की को बेहोशी की हालत में पाया था। जिसके बाद वे उसे अपने घर वापस ले आए, जहाँ उसने अपनी माँ को इस घटना के बारे में बताया था कि उपरोक्त दो मामलों के अपीलार्थियों और एक अंकुश कुमार यादव ने उसके साथ बलात्कार किया था।हालाँकि, पी. डब्ल्यू. 10. विकास यादव, जो एक स्वतंत्र गवाह है, ने अपनी गवाही में कहा है कि रमाकांत मंडल की बेटी यानी पीड़ित लड़की का नितीश कुमार के साथ प्रेम संबंध था और नितीश कुमार पीड़ित लड़की के साथ भाग गया था, जिसके बाद वह वापस नहीं आई और उसके बाद उसकी मृत्यु हो गई थी। इस प्रकार पीड़ित लड़की की लिखित

रिपोर्ट, धारा 164 के तहत विद्वत मजिस्ट्रेट के समक्ष दिए गए उसके बयान और उपरोक्त गवाहों की गवाही का अध्ययन करने से पता चलता है कि गंभीर विरोधाभास हैं जो निश्चित रूप से इस निष्कर्ष की ओर ले जाते हैं कि उनकी गवाही भरोसेमंद नहीं है, विशेष रूप से डॉ. पूनम मिश्रा द्वारा दिए गए चिकित्सा साक्ष्य को देखते हुए, जिन्होंने 05.08.2020 को पीड़ित लड़की की चिकित्सा जांच करने के बाद चिकित्सा रिपोर्ट तैयार की थी, और उसे उसके शरीर के बाहरी या आंतरिक हिस्से पर हिंसा का कोई संकेत नहीं मिला था, योनि या वल्वा के आंतरिक भाग या बाहरी हिस्से पर या अंडरगारमेंट पर विदेशी बाल मौजूद नहीं पाए गए थे,, योनि या वल्वा या अंडरगारमेंट पर बाहरी स्राव मौजूद नहीं पाया गया था, योनि के स्वाब में शुक्राणु नहीं पाए गए थे, अल्ट्रासाउंड रिपोर्ट में दिखाया गया कि पीड़ित लड़की गर्भ में 6 सप्ताह 2 दिन की गर्भावस्था में थी और अंत में उसने अपने नैदानिक/चिकित्सीय निष्कर्ष में कहा था कि बलात्कार का कोई सबूत नहीं है।

37. यह एक अच्छी तरह से स्थापित कानून है कि मुकदमे के दौरान जांच के लिए पीड़िता की अनुपलब्धता के मामले में अभियोजन पक्ष के मामले को खारिज नहीं किया जाना चाहिए और पीड़िता की मृत्यु और उसकी गैर-जांच एक आरोपी को बरी करने का आधार नहीं हो सकती है, अगर कोई ठोस सबूत है, अन्यथा संबंधित आरोपी के आपराधिक कृत्य को साबित करने के लिए उपलब्ध है।इस प्रकार, परीक्षण के लिए पीड़ित की अनुपलब्धता का केवल तथ्य अभियोजन मामले के लिए घातक नहीं हो सकता है और अदालत को उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर मामले का फैसला करना चाहिए। इस संबंध में, ***कर्नाटक राज्य बनाम महाबलेश्वर गौर्या नाइक, 1992*** में रिपोर्ट किया गया **(3)** ***एस. सी. सी. 179.*** के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का संदर्भ दिया जाना चाहिए। यह समान रूप से एक अच्छी तरह से स्थापित कानून है कि चिकित्सा साक्ष्य के साथ पुष्ट पर्याप्त मौखिक साक्ष्य के अभाव में यह माना जा सकता है कि अपीलार्थियों को आरोपित अपराधों के लिए निर्दोष माना जाएगा और धारा 164 के तहत दर्ज पीड़ित के बयान का उपयोग पुष्टि या विरोधाभास के लिए किया जा सकता है, लेकिन दोषसिद्धि के लिए एकमात्र आधार नहीं हो सकता है।इस संबंध में, ***सत्यमानु कुमार सिंह***

बनाम बिहार राज्य के मामले में इस न्यायालय की विद्वान खंड पीठ द्वारा दिए गए एक फैसले को संदर्भित किया जाना चाहिए जो ***2023 एस सी सी ऑनलाइन पैट 5103*** में प्रस्तुत/रिपोर्ट किया गया था। इसलिए, जो कानून उभरता है वह यह है कि केवल इसलिए कि पीड़ित की मृत्यु हो गई है और परिणामस्वरूप उसकी जांच नहीं की जा सकती है, किसी आरोपी को बरी करने का आधार कभी नहीं हो सकता है यदि संबंधित आरोपी के आपराधिक कृत्य को साबित करने के लिए अन्यथा सबूत उपलब्ध हैं और आरोपी को केवल धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत पीड़ित लड़की द्वारा दिए गए बयान पर भरोसा करके बलात्कार के अपराध के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता है।

38. अब वर्तमान मामले पर वापस आते हुए, हम पाते हैं कि पीड़ित लड़की की मौत के कारण उसकी गवाही/बयान की उपलब्धता के अभाव में, हालांकि उसकी गैर-जांच अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक नहीं होगी, लेकिन फिर यह देखना होगा कि क्या संबंधित आरोपी के आपराधिक कृत्य को साबित करने के लिए रिकॉर्ड पर अन्यथा सबूत उपलब्ध हैं। वर्तमान मामले में, पीड़ित लड़की ने घटना के संबंध में एक विरोधाभासी बयान दिया है क्योंकि उसने अपनी लिखित रिपोर्ट दिनांक 04.08.2020 और पुलिस के समक्ष धारा 161 दं. प्र. सं. के तहत दिए गए अपने बयान में, उसने पहले मामले के अपीलार्थियों और एक अंकुश कुमार यादव द्वारा बलात्कार की केवल एक घटना के बारे में कहा है, हालांकि बाद में 19.08.2020 को विद्वान न्यायिक मजिस्ट्रेट, प्रथम श्रेणी के समक्ष धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दिए गए अपने बयान में उसने कहा है कि पहले उसके साथ दिनांक 13.07.2020 को अमन यादव यानी पहले मामले के अपीलार्थी संख्या 1 द्वारा बलात्कार किया गया था और उसके बाद उपरोक्त दो मामलों के अपीलार्थियों के साथ/सहित एक अंकुश कुमार यादव द्वारा बलात्कार किया गया था।डॉ. पूनम मिश्रा द्वारा प्रस्तुत पीड़ित लड़की की चिकित्सा जांच रिपोर्ट से हमें यह भी पता चलता है कि न तो पीड़ित लड़की के शरीर के बाहरी या आंतरिक भाग पर और न ही योनि या वल्वा के बाहरी या आंतरिक भाग पर हिंसा का कोई संकेत है और वास्तव में बलात्कार का कोई सबूत नहीं मिला है। इस प्रकार हम पाते हैं कि चिकित्सा साक्ष्य विशेष रूप से पीड़ित लड़की के साथ

बलात्कार के दावे को खारिज करते हैं, अपीलकर्ताओं द्वारा उस पर हमला किए जाने के तथ्य को बहुत कम करते हैं। इस प्रकार, इस न्यायालय की विद्वान खंड पीठ द्वारा ***पवन कुमार*** *(उपरोक्त)* के मामले में निर्धारित कानून पर विचार करते हुए, इस आशय का प्रतिकूल निष्कर्ष निकालना होगा कि अभियोजन पक्ष का पक्ष/संस्करण विश्वसनीय नहीं है।

39. हम आर. शाजी बनाम केरल राज्य के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए एक निर्णय का उल्लेख करना चाहते हैं, जो ***(2013) 14 एस. सी. सी. 266***, पैराग्राफ Nos. 26 और 29 में रिपोर्ट किया गया है, जिसके बारे में नीचे पुनः प्रस्तुत किया जा रहा हैः.

> *"26. शपथ के तहत अदालत में दिए गए साक्ष्य की बहुत पवित्रता होती है, यही कारण है कि इसे मूल साक्ष्य कहा जाता है।*
>
> *धारा 161 सी. आर. पी. सी. के तहत बयानों का उपयोग केवल विरोधाभास के उद्देश्य से किया जा सकता है और धारा 164 सी. आर. पी. सी. के तहत बयानों का उपयोग पुष्टि और विरोधाभास दोनों के लिए किया जा सकता है। ऐसे मामले में जहां मजिस्ट्रेट को दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 164 के तहत बयान दर्ज करने का कर्तव्य निभाना होता है, वह उन सभी सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए बाध्य है जो गवाह प्रकट करना चाहता है, एक गवाह के रूप में जो एक अनपढ़ हो सकता है, देहाती ग्रामीण को इस बात की जानकारी नहीं हो सकती है कि उसे किस उद्देश्य के लिए लाया गया है, और उसे दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 164 के तहत अपने बयानों में क्या खुलासा करना चाहिए। इसलिए, मजिस्ट्रेट को गवाह से व्याख्यात्मक प्रश्न पूछने चाहिए और उक्त मामले के संबंध में सभी संभावित जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।29. जाँच के दौरान, पुलिस*

अधिकारी कभी-कभी महसूस कर सकता है कि दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 164 के तहत एक गवाह का बयान दर्ज करना समीचीन है। यह आमतौर पर तब होता है जब किसी अपराध के गवाह स्पष्ट रूप से आरोपी से जुड़े होते हैं, या जहां आरोपी बहुत प्रभावशाली होता है, जिसके कारण गवाह प्रभावित हो सकते हैं।(मामंद बनाम सम्राट [(भुबोनी साहू बनाम आर. [ए. आई. आर. 1949 पी. सी. 257], राम चरण बनाम यू. पी. राज्य। [ए. आई. आर. 1968 एस. सी. 1270]

और धनबल बनाम टी. एन. राज्य [(1980) 2 एस. सी. सी. 84:ए. आई. आर. 1980 एस. सी. 628]) "

40. इस प्रकार हम अभिलेख पर सामग्री और अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य से पाते हैं, जिसमें चिकित्सा साक्ष्य भी शामिल हैं कि पीड़ित लड़की द्वारा अपनी लिखित रिपोर्ट में दिए गए बयान और धारा 164 के तहत दिए गए बयान विरोधाभासों से भरे हुए हैं, अभियोजन पक्ष मूलभूत तथ्यों को स्थापित करने में विफल रहा है, चिकित्सा साक्ष्य पीड़ित लड़की के साथ बलात्कार का कोई संकेत नहीं दिखाता है और इसके विपरीत यह दर्शाता है कि पीड़ित लड़की अपने गर्भ में 6 सप्ताह 2 दिनों की गर्भावस्था ले रही थी, जो अभियोजन पक्ष द्वारा अस्पष्ट रही है, हालांकि पी. डब्ल्यू. 10. विकास यादव और स्वतंत्र गवाह ने कहा है कि पीड़ित लड़की को पी. डब्ल्यू. 13. नितीश कुमार के साथ प्यार/प्रेम संबंध था,वह उसके साथ भाग गई थी और गर्भवती हो गई थी, लेकिन नितीश कुमार ने उससे शादी करने से इनकार कर दिया था और फिर वह नहीं लौटी, जो निश्चित रूप से अभियोजन पक्ष के गवाहों की गवाही पर सवालिया निशान लगाता है, इस तथ्य के अलावा कि हालांकि इस मामले के जांच अधिकारी मणि भूषण कुमार ने कई स्वतंत्र गवाहों का बयान दर्ज किया था, लेकिन उन्हें अभियोजन पक्ष द्वारा रोक दिया गया है और मुकदमे/विचारण के दौरान पेश नहीं किया गया है, जिनसे अभियोजन पक्ष के उद्देश्य के संबंध में प्रतिकूल निष्कर्ष निकाला जाना है।इसलिए वर्तमान मामले

में, चूंकि अभियोजन पक्ष बलात्कार के अपराध को सभी उचित संदेहों से परे स्थापित करने के लिए ठोस, विश्वसनीय और भरोसेमंद सबूत देने में विफल रहा है, इसलिए पॉक्सो अधिनियम की धारा 29 के तहत कोई धारणा नहीं बनती है।

41. इसलिए, हम पाते हैं कि विद्वत विचारण न्यायाधीश ने यह अभिनिर्धारित करने में एक बड़ी त्रुटि की है कि अभियोजन पक्ष ने इस आशय के मूलभूत तथ्य कि अभियुक्त व्यक्तियों ने पीड़ित पर यौन हमला/बलात्कार किया है और बचाव पक्ष पॉक्सो अधिनियम की धारा 29 और 30 के तहत सभी उचित संदेह से परे अपनी बेगुनाही साबित करने में सक्षम नहीं है, को स्थापित किया है। हम यह भी पाते हैं कि धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दर्ज किया गया बयान सबूत का एक ठोस आधार नहीं है, हालांकि यह एक औपचारिक बयान है जो एक तथ्य की जांच करने के लिए सक्षम प्राधिकारी के समक्ष दिया गया है जिसका उपयोग भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 145 के तहत विरोधाभास के लिए या भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 157 के तहत ऐसा बयान देने वाले गवाह की पुष्टि के लिए किया जा सकता है। इस संबंध में, ***राजस्थान राज्य बनाम करतार सिंह*** और समान मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय का उल्लेख किया जाना चाहिए, जो ***(1970) 2 एस सी सी 61*** में रिपोर्ट किया गया है। इसलिए, हम पाते हैं कि विद्वत विचारण न्यायाधीश ने यह अभिनिर्धारित करके गलती की है कि धारा 164 दं. प्र. सं. के तहत दर्ज पीड़ित लड़की के बयान की पुष्टि पी. डब्ल्यू. 6, पी. डब्ल्यू. 7, पी. डब्ल्यू. 8, पी.डब्लू.12 और पी.डब्लू.13 की गवाही से की गई है।

42. इस प्रकार हमारा विचार है कि अभियोजन पक्ष भारतीय दंड संहिता की धारा 376 डी ए और पॉक्सो अधिनियम की धारा 5 (जी)/6 के तहत दंडनीय बलात्कार/सामूहिक बलात्कार के अपराध को सभी उचित संदेहों से परे साबित करने में विफल रहा है। इस प्रकार तथ्यों और परिस्थितियों में, जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है और पूर्वगामी कारणों के लिए, हमारा विचार है कि वर्तमान मामले में बाध्यकारी कारण हैं, जो मजबूर करते हैं कि उपरोक्त दोनों मामलों के अपीलार्थियों को संदेह का लाभ दिया जाए।

43. तदनुसार, हमारी राय में, विचारण न्यायालय द्वारा अभिलिखित दोषसिद्धि का निष्कर्ष टिकाऊ नहीं है और इसमें हस्तक्षेप की आवश्यकता है, इसलिए, दिनांक 10.02.2023 के दोषसिद्धि का निर्णय और दिनांक 04.03.2023 के सजा के आदेश जो विशेष न्यायालय (पॉक्सो अधिनियम) के विद्वान न्यायालय-सह-7 वें अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश भागलपुर द्वारा POCSO मामले संख्या 81 वर्ष 2020 (एकचरी पी.एस. मामले संख्या 18 वर्ष 2020 से उत्पन्न) में पारित किया गया था, को रद्द किया जाता है।

44. उपरोक्त दोनों अपीलों के अपीलार्थी अभिरक्षा में हैं, इसलिए वर्तमान निर्णय द्वारा उनके बरी होने के परिणामस्वरूप, उन्हें तुरंत रिहा किया जाए, यदि किसी अन्य मामले में इसकी आवश्यकता नहीं है।

45. उपरोक्त दो अपीलों को तदनुसार स्वीकृति दी जाती है।

(मोहित कुमार शाह, न्यायमूर्ति)

मैं सहमत हूँ।

नानी तागिया, न्यायमूर्ति :-

(नानी तागिया, न्यायमूर्ति)

नरेंद्र/सोनल

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नही किया जा सकता । समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।